कुष्ठ उन्मूलन की राह में

मनीष वैद्य

कुष्ठ रोग के सम्बंध में प्राय: हर समाज में कई तरह के भ्रम, भय, निराधार धारणाएं व मान्यताएं फैली हुई हैं। इनके चलते कुष्ठ रोग मात्र चिकित्सकीय समस्या न होकर सामाजिक व मनोवैज्ञानिक समस्या बना हुआ है।

भारत के 30 राज्यों व 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में 455 ज़िले हैं। इनमें से 201 ज़िलों में कुष्ठ का प्रभाव काफी ज़्यादा है; इन ज़िलों में प्रति 1000 जनसंख्या पर 5 व्यक्ति कुष्ठ-प्रभावित हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार उस वक्त भारत में लगभग 40 लाख कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति थे, लेकिन सरकारी सर्वे के आधार पर माना जा रहा है कि 1994 के अन्त तक यह संख्या 10 लाख रह गई थी।

दरअसल इस रोग का एकमात्र कारण है शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता न होना। यदि यह बात जन-जन तक पहुंचाई जा सके तो इस रोग के बारे में फैले भ्रम तोड़े जा सकते हैं, निराधार धारणाएं व खोटी मान्यताएं बदली जा सकती हैं। इससे इस रोग को लेकर फैला अकारण भय मिटाया जा सकता है। जहां तक कुष्ठ रोगी के ठीक होने का प्रश्न है, वह तो नियमित उपचार से ठीक हो ही जाता है।

कुष्ठ की कारगर औषधि डेपसोन की खोज के बाद सन् 1954-55 में भारत ने कुष्ठ नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया था। लेकिन इस उपचार में 5 से 10 वर्ष या इससे भी अधिक समय लग जाता था। अनियमित औषधि सेवन के कारण अनेक मामलों में यह अकेली दवा कारगर नहीं पाई गई व कुछ रोगियों में औषधि प्रतिरोध भी उत्पन्न हो गया था। सन् 1978 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बहुऔषधि उपचार को कुष्ठ रोग उपचार हेतु काफी प्रभावशाली पाया। भारत सरकार ने 1982-83 में राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम हेतु इसे अपनाया।

कुष्ठ रोग क्या है?

कुष्ठ एक रोग है जो कुष्ठ के रोगाणुओं *लेप्राबेसिलाई* या *माइक्रो बेक्टीरियम लेप्री* से होता है। इनका आकार-प्रकार क्षय रोग (टी.बी) के रोगाणुओं से मिलता-जुलता है। प्रत्येक मानव शरीर में अनेक रोगों से लड़ने की प्राकृतिक क्षमता होती है। कुछ रोगों से लड़ने की शक्ति वह अपने परिवेश से धीरे-धीरे अर्जित भी करता है। कुष्ठ रोग के सम्बंध में तथ्य यह है कि 98 से 99 प्रतिशत व्यक्तियों के शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की पर्याप्त प्राकृतिक क्षमता होती है। एक से दो प्रतिशत व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जिनके शरीर में यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बिल्कुल नहीं या बहुत कम होती है। यही वे व्यक्ति हैं जिन्हें कुष्ठ रोग होने की सम्भावना अधिक होती है। यानी किसी व्यक्ति को कुष्ठ रोग होना या न होना उसकी निजी कुष्ठ प्रतिरोधक क्षमता व उसका रोगाणुओं के सम्पर्क में आने पर निर्भर करता है।

इस रोग का एकमात्र कारण है शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं से लड़ने की क्षमता न होना। कुष्ठ रोगी नियमित उपचार से ठीक हो ही जाता है।

कुष्ठ रोगाणु की खोज करने वाले नॉर्वे के डॉ. हेनसन्स ने कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति के शरीर पर उभरी गांठों का रस इंजेक्शन द्वारा अपने शरीर में तीन बार प्रविष्ट कराया था। लेकिन उनके शरीर की पर्याप्त रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण उन्हें यह रोग नहीं हुआ। हालांकि कुष्ठ एक संक्रामक रोग है किन्तु वास्तव में बहुत कम रोगी संक्रामक होते हैं। कुष्ठ पीढ़ी

जन्म का दाग | विटामिन की कमी से होने वाला दाग | सोरियासिस | दाद

कुष्ठ रोग के समान दिखते ये चर्म रोग कुष्ठ रोग नहीं हैं।

दर पीढ़ी नहीं होता, यह जन्मजात रोग नहीं है, यह किसी विशेष खानपान से नहीं होता, पाप-श्राप या देवी-देवताओं के रूठने से इसका कोई सम्बंध नहीं है, यह छुआछूत से भी नहीं होता। कम रोग प्रतिरोधक क्षमता होने से यह रोग एक-आधे प्रतिशत व्यक्तियों को हो सकता है। इसमें भी 85 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं की संख्या बहुत कम होती है और ये रोगाणु उनके शरीर से बाहर नहीं निकलते। कुष्ठ के रोगाणु श्वसन क्रिया द्वारा वायुमण्डल से लोगों के शरीर में पहुंच सकते हैं।

यह एक काल क्रमिक रोग है। शरीर में इन रोगाणुओं के संक्रमण के सामान्यतः 2 से 5 वर्ष बाद रोग के चिन्ह, लक्षण प्रकट होते हैं। अध्ययनों के अनुसार कुष्ठ का उद्‌भव काल (इन्क्यूबेशन पीरियड) 6 माह से दो-ढाई वर्ष है।

कुष्ठ के लक्षण

चमड़ी पर तेलिये, तामिया चमक या चमड़ी पर चमड़ी के रंग से कुछ फीका, हल्का पीला-लाल सा बदरंग सुन्न दाग कुष्ठ हो सकता है। इस

लाल उभरा हुआ सुन्न दाग

समतल सुन्न दाग

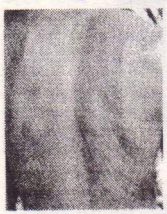

कई समतल सुन्न दाग

चमड़ी पर सूजन, दाने गठानें

कुष्ठ पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं होता, यह जन्मजात रोग नहीं है, यह किसी विशेष खानपान से नहीं होता, पाप-श्राप या देवी-देवताओं के रूठने से इसका कोई सम्बंध नहीं है, यह छुआछूत से भी नहीं होता। कम रोग प्रतिरोधक क्षमता होने से यह रोग एक-आधे प्रतिशत व्यक्तियों को हो सकता है। इसमें भी 85 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके शरीर में कुष्ठ के रोगाणुओं की संख्या बहुत कम होती है और ये रोगाणु उनके शरीर से बाहर नहीं निकलते।

दाग में न दर्द, न जलन, न खुजली न चुभन, न ठण्डा, न गरम महसूस होता है। इसके अलावा चेहरे पर भौहों के ऊपर, ठोड़ी पर, कानों के किनारों पर सूजन या मोटापन हो, गांठें हों, शरीर पर पाई जाने वाली मुख्य सतही (जैसे हाथ या पैरों की) तंत्रिकाओं में सूजन, मोटापा या टटोलने पर उनमें दर्द होता है। ये लक्षण प्रभावित व्यक्तियों के शरीर पर अलग-अलग ढंग से प्रगट होते हैं। हाथ पैरों में झुनझुनी, सुन्नपन, सूखापन होने पर भी कुष्ठ का संदेह किया जा सकता है। इसके अलावा भोजन पकाते समय या बीड़ी पीते समय हाथ की चमड़ी पर बार-बार फफोले उठ आते हों, जलने का पता ही नहीं चल पाता हो या दर्द भरी गांठों के साथ बुखार व कभी-कभी जोड़ों में दर्द हो जाता हो या भौहों के बाल कम हो जाएं, या झड़ जाएं, हाथ की उंगलियों की पकड़ कमज़ोर हो जाए, हाथ की छोटी उंगली में कमज़ोरी व झुकाव आ जाए, पोंहचा अचानक झूल जाए, पैर के तलवे में घाव हो जाए जो भरता न हो, पांव अचानक झूल जाए, नाक ठस जाए और नाक से खून निकलता हो, पलकें बंद न हों, प्रसव के बाद शरीर के दाग-धब्बों में उभार होकर चेहरे पर एकाएक सूजन आ जाए। इन जैसे लक्षणों के होने पर भी कुष्ठ रोग का संदेह हो सकता है। ऐसी स्थिति में विशेषज्ञों की राय लेनी चाहिए।

नए बहुऔषधि उपचार से कुष्ठ का रोगी बहुत जल्दी पूरी तरह से स्वस्थ हो सकता है। कुष्ठ मूलतः तंत्रिकाओं को प्रभावित करने वाला रोग है जिसमें चमड़ी और श्लेष्मिक झिल्लियां भी प्रभावित होती हैं। तंत्रिकाओं के प्रभावित होने व समय पर उचित चिकित्सा न मिलने के कारण शरीर के कुछ अंगों में भी विकृतियां आ जाती हैं। कुष्ठ रोग के जल्दी निदान, नियमित व पूरे उपचार से विकृतियों का आना रोका जा सकता है।

कुष्ठ में काफी कारगर पाया गया बहुऔषधि उपचार दरअसल एक से अधिक कुष्ठ निवारक औषधियों को एक साथ देना है। इसमें **डेपसोन, रिफेम्पीसीन, क्लोफाजिमीन** दवाओं

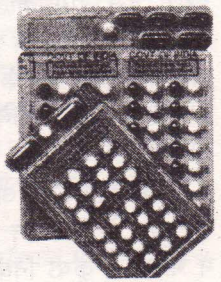

को एक साथ प्रयोग में लाया जाता है। रोगी के शरीर में रोगाणुओं की संख्या एवं उनका वर्गीकरण या दाग धब्बों की संख्या एवं उनकी प्रकृति के अनुसार इस उपचार में दो या तीन प्रकार की औषधियों का प्रयोग किया जाता है।

भारत सरकार द्वारा विगत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम एक अभियान के रूप में चलाया जा रहा है। देश भर में इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं किन्तु लोगों में जनचेतना बढ़ाने तथा कुष्ठ के प्रति लोगों की परंपरागत सोच व भ्रांतियों को दूर करने में अपेक्षित कम सफलता मिली है। इसके लिए और अधिक प्रयासों की जरूरत है।

कुष्ठ के बारे में व्याप्त दकियानूसी धारणाओं की वजह से लोग अपनी बीमारी छिपाते रहते हैं। वे अक्सर इसका हल केवल ओझाओं, तांत्रिकों, झाड़-फूंक करने वालों के पास ही पाते हैं। कुष्ठ रोगियों को समाज घृणा की नजर से देखता है। इसीलिए कुष्ठ रोगियों को आम तौर पर गांव/बस्ती से बाहर बसाने की सलाह दी जाती है। माना जाता है कि कुष्ठ रोगी के तालाब में नहाने से यह रोग दूसरों को होता है या मृत कुष्ठ रोगी को जलाने से फैलता है। उनके अनुसार कुष्ठ पीड़ित व्यक्तियों को गृहस्थ जीवन नहीं बिताना चाहिए व उनका घर-परिवार में रहना घातक है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह रोग कुलीन परिवारों में नहीं होता, यह तो केवल गरीबों को होता है।

इन तमाम निराधार, अवैज्ञानिक व अतार्किक धारणाओं का बदलना बेहद जरूरी है। जरूरी है कि लोग जानें कि नियमित उपचार से यह पूरी तरह से ठीक हो जाता है। और यह भी कि इन निराधार धारणाओं से चिपके रहना कुष्ठ के आधार को पुख्ता करता है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***

कुष्ठ प्रभावित के अंगों में विकृतियां और घाव तभी आते हैं जब रोग का –

– उपचार न किया जाए
– उपचार लेने में देर की जाए।
– उपचार अधूरा लिया जाए।
– उपचार नियमित न लिया जाए।
– अंगों में गड़बड़ी आने पर उचित सलाह न ली जाए, न मानी जाए।

सुन्न हाथ-पैरों की नियमित देखभाल करने व जल-तेल-व्यायाम से हाथ-पैरों को विकृत होने से, विकृति को बिगड़ने व बढ़ने से बचाया जा सकता है।

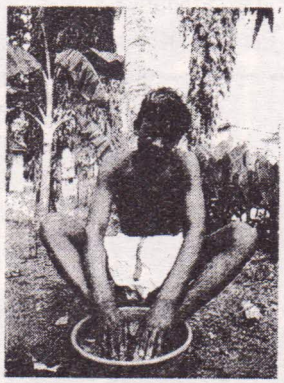

1. सुबह–शाम हाथ–पैरों की नियमित जांच करें।
2. आधा घण्टे तक हाथ–पैरों को सादा–ताजे पानी में डुबाएं रगड़ें व साफ करें।
3. गीले हाथ–पैरों में खाने का कोई भी तेल मलें और अंगों को व्यायाम कराएं।

मनीष वैद्य : होमियोपैथिक दवाख़ाना में कार्यरत हैं और स्वतंत्र रूप से लेखक हैं।